P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

दक्षिण चीन सागर विवाद : एक विश्लेषण

रामकृष्ण सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,
श्री गणेश राय पी0जी0 कॉलेज,
डोभी, जौनपुर, उ0प्र0

सारांश

इस शोध पत्र में दक्षिण चीन सागर विवाद का विश्लेषण किया गया है। दक्षिण चीन सागर विवाद मुख्यतः तीन द्वीप समूहों को लेकर है, जिसमें पार्सेल द्वीप समूह, स्प्रैटली द्वीप समूह तथा नाटूना द्वीप समूह प्रमुख है। चीन अपनी विस्तारवादी नीति के तहत इन द्वीप समूहों पर अपना नियंत्रण स्थापित करना चाहता है। इन द्वीप समूहों में पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं। इस लेख में दक्षिण चीन सागर विवाद के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया गया है। दक्षिण चीन सागर विवाद में महत्वपूर्ण कारक उसकी भौगोलिक अवस्थिति है, जिसके कारण इस क्षेत्र में चीन, अमेरिका, जापान और भारत अपने व्यापारिक एवं सामरिक हितों की सुरक्षा का प्रयास कर रहे हैं जिसके कारण इस क्षेत्र में तनाव उत्पन्न हो गया है। इस क्षेत्र के राष्ट्र इससे प्रभावित हो रहे हैं और उनकी सुरक्षा चिन्ताएँ बढ़ गयी हैं।

मुख्य शब्द : प्रक्षेपास्त्र, हस्तक्षेप, आसियान।

प्रस्तावना

दक्षिणी चीन सागर में महत्वपूर्ण तीन द्वीप समूहों पार्सेल द्वीप समूह, स्प्रैटली द्वीप समूह तथा नाटूना द्वीप समूह को लेकर विवाद है। चीन अपनी विस्तारवादी नीति के तहत इन द्वीपों पर अपना नियंत्रण बनाना चाहता है, जिसके कारण इस क्षेत्र के राष्ट्र वियतनाम, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, मलेशिया आदि प्रभावित हैं। बड़ी शक्तियों जापान, अमेरिका और भारत के भी इस क्षेत्र में व्यापक हित हैं इसलिए प्रभावित राष्ट्र तथा भारत, जापान और अमेरिका चीन की नीति का विरोध कर रहे हैं। ये राष्ट्र दक्षिण चीन सागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने का प्रयास कर रहे हैं। ये राष्ट्र इस विवाद का शांतिपूर्ण समाधान चाहते हैं, लेकिन चीन निरन्तर इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।

दक्षिण चीन सागर विवाद के कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कुछ राष्ट्रों के मध्य तनाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है। चीन की दक्षिण चीन सागर के प्रति नीति तथा चीन की विस्तारवादी नीति का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में छोटे–बड़े सभी प्रभावित राष्ट्र विरोध कर रहे हैं। जुलाई 1916 से यह विवाद अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रमुख विषय बना हुआ है। दक्षिण चीन सागर में चीन के और अन्य राष्ट्रों के हित जुड़े हुए हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र में निरन्तर तनाव बढ़ता जा रहा है। कुछ रक्षा विशेषज्ञ इसे अगले विश्वयुद्ध की शुरूआत के रूप में देख रहे हैं।

दक्षिण चीन सागर पर दावेदारी करने वाले राष्ट्रों की संख्या बढ़ती जा रही है जिससे यह विवाद और जटिल होता जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

इसके अध्ययन का उद्देश्य दक्षिण चीन सागर विवाद का विश्लेषण करना है

दक्षिण चीन सागर का विवाद

दक्षिण चीन सागर का विवाद मुख्यतः चीन और बाकी दक्षिणी पूर्वी एशियाई राष्ट्रों ASEAN के बीच में है, इसमें ताइवान भी अपना दावा पेश करता है। चीन का पड़ोसी देश फिलीपींन्स तो इस विवाद को स्थायी मध्यस्थता न्यायालय तक लेकर गया। न्यायालय ने अपने निर्णय में चीन के विरूद्ध फैसला सुनाया, लेकिन चीन ने इसे मानने से इनकार कर दिया। चीन अन्तर्राष्ट्रीय कानून का निरन्तर उल्लंघन कर रहा है और सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि रूस चीन का समर्थन कर रहा है। आज हालात यह है कि दक्षिणी चीन सागर विवाद का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो गया है।

दक्षिण चीन सागर की भौगोलिक अवस्थिति–

दक्षिण चीन सागर में मुख्यतः तीन द्वीप समूह है–

1. पार्सेल द्वीप समूह
2. स्प्रैटली द्वीप समूह

3. नाटूना द्वीप समूह

इन द्वीप समूहों में पार्सेल द्वीप समूह दक्षिण चीन सागर के उत्तर–पश्चिम में स्थित है, जबकि स्प्रैटली द्वीप समूह दक्षिण–पूर्व में स्थित है और नाटूना द्वीप समूह दक्षिण चीन सागर में दक्षिण–पश्चिम में अवस्थित है।

दक्षिण चीन सागर के संसाधन

1. दक्षिण चीन सागर में बहुत ज्यादा मात्रा में संसाधन उपलब्ध है। यह विश्व का दूसरा बड़ा व्यापारिक मार्ग है। इसमें विश्व का 50 प्रतिशत व्यापारिक गतिविधियाँ संचालित होती है।
2. दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में 7.7 विलियन वैरल तेल उपलब्ध है। जिस पर चीन की नजर है।
3. दक्षिण चीन सागर में 266 ट्रिलियन क्यूविक फीट प्राकृतिक गैस उपलब्ध हैं
4. इस क्षेत्र में विश्व का 33 प्रतिशत समुद्री जैव विविधता पाई जाती है।
5. दक्षिण चीन सागर मस्य संसाधन भी ठीक–ठाक है।

अभी हाल में इस क्षेत्र में चीन ने गैस और तेल की खोज के लिए अपना प्रयास तीव्र कर दिया है। मई 1917 में चीन ने यहाँ SCS में मिथेन, हाइड्रेट खोज निकाला है जो कि भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण ईधन का स्रोत माना जाता है।

तटीय विवाद (Territorial Dispute)

पार्सेल द्वीप समूह विवाद मुख्यतः चीन, वियतनाम और ताईवान के बीच है। स्प्रैटली द्वीप समूह विवाद मुख्यतः चीन वियतनाम, फिलीपीन्स, ब्रुनोई, मलेशिया और ताइवान के बीच है। नातूना द्वीप समूह विवाद मुख्यतः चीन, ताईवान और इण्डोनेशिया के बीच है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1974 में जब अमेरिका–वियतनाम युद्ध शुरू होने वाला था तब चीन ने पार्सेल द्वीप समूह पर आक्रमण कर दिया। उस समय पार्सेल द्वीप समूह पर वियतनाम का अधिकार था। चीन पार्सेल द्वीप समूह पर अपने अधिकार का दावा 1948 से कर रहा है। प्रशांत महासागर और कोरिया में चीन इसके पहले से व्यस्त था और 1962 में उसने भारत के साथ युद्ध किया था। 1969 में पूर्व सोवियत संघ से यूसुरी नदी के पास हुए एक छोटे युद्ध में चीन की हार हो गयी, चीन ने इस समय आर्थिक मामलों में भी गलत निर्णय लिया जैसे कि ग्रेटलाप फाडवर्ड। 1948 के बाद चीन ने दक्षिण चीन सागर में 1974 में अपनी पहली गतिविधि दिखाई। 1974 में पार्सेल द्वीप समूह पर आक्रमण के समय 18 चीनी और 53 वियतनामी सैनिक मारे गये। 1974 के बाद 1988 में फिर से वियतनाम ने पार्सेल द्वीप समूह के पास अपनी गतिविधि प्रारम्भ की, लेकिन वियतनाम हार गया, क्योंकि उसके 80 सैनिक मारे गये।

1990 के मध्य चीन ने पूरे पार्सेल द्वीप समूह पर कब्जा कर लिया एक तरह से उसके बाद पार्सेल द्वीप समूह पर चीन का कब्जा हो गया। चीन के पास इस समय केवल पाँच–छः छोटे द्वीप समूह थे, जबकि स्प्रैटली द्वीप समूह में वियतनाम के पास 30 द्वीप थे, वहीं फिलीपीन्स के पास 15 द्वीप थे और मलेशिया ब्रुनोई भी इस क्षेत्र में मौजूद थे। 2008 तथा 2010 के बीच चीन ने तीव्रता दिखाते हुए इस क्षेत्र पर अपना दावा करना शुरू कर दिया था। चीन ने इन द्वीप समूहों पर अपने क्षेत्र का विस्तार बढ़ा लिया जिस पर वह अपने बहुत सारे रनवे और प्लोटिक डक स्थापित कर लिया। वर्तमान समय में चीन का दक्षिण चीन सागर पर सैनिक नियंत्रण बहुत ज्यादा बढ़ गया है, चीन इस समय जिस गति से यहाँ पर अपनी उपस्थिति बढ़ा रहा है आने वाले 10 वर्षों में दक्षिण चीन सागर में चीन को कोई भी देश मुकाबला नहीं कर पायेगा। भविष्य में चीन की इस कार्यवाही से तटीय एवं प्रभावित राष्ट्रों के सामरिक एवं व्यापारिक हित प्रभावित होंगे।

तेल और मत्स्य

फिलीपीन्स ने इस क्षेत्र में 1970 में तेल खोजना शुरू कर दिया था। इस क्षेत्र में फिलीपीन्स को रिड बैंक में तेल मिला, लेकिन चीन ने फिलीपीन्स का तीव्र विरोध किया, जिसके कारण फिलीपीन्स इस क्षेत्र तेल की खोज रोक दी। 1984 में फिलीपीन्स ने पल्लूरम द्वीप समूह में तेल की खोज की जो कि फिलीपीन्स के तेल की मांग का 15 प्रतिशत आपूर्ति करता है। 1984 में फिलीपीन्स के राष्ट्रपति फरडिनेन्ट मारकोश ने उत्तरी स्प्रैटली द्वीप समूह पर अपना दावा प्रस्तुत किया। 1970 तथा 1980 के मध्य तक फिलीपीन्स ने तेल निकालना शुरू कर दिया था।

2011 में भारत और वियतनाम दोनों ने मिलाकर तेल की खोज प्रारम्भ कर दी। जहाँ तेल की खोज शुरू हुई थी वहाँ पर वियतनाम का नियंत्रण था। चीन ने इस कार्यवाही का विरोध किया। चीन की नौसेना ने भारतीय नैसेना को परेशान करना शुरू कर दिया, विशेष कर उन क्षेत्रों में जहाँ मित्रवत पेट्रोलिंग होती थी।

इस क्षेत्र में मत्स्य उत्पादन एक बहुत बड़ा विषय है, क्योंकि 2012 की रिपोर्ट के हिसाब से चीन विश्व का 12 प्रतिशत मछली पकड़ता है। जिसके कारण तटीय राष्ट्रों के बीच विवाद उत्पन्न होता रहता है। दक्षिणी चीन सागर में तेल और मत्स्य उत्पादन का मूल्य एक ट्रिलियन डालर के आस–पास है। चीन इस पर अपना नियंत्रण चाहता है। चीन की इस कार्यवाही का तटीय राष्ट्र विरोध करते हैं।

जुलाई 2014 में एलेन्ट डूपान्ट ने कहा कि चीनी सरकार मछली पकड़ने वाली नौका को दक्षिण चीन सागर के विवादित क्षेत्र में जान–बूझकर भेजती है। यह चीन नीति का हिस्सा है। 2013 में फिलीपीन्स की नौसेना ने एक ताइवान व्यापारी को गोली मार दी, जो कि मछली पकड़ने के लिए दक्षिण चीन सागर में था।

2015 में इण्डोनेशिया ने यह घोषणा कि जो भी तटीय क्षेत्रों में मछली पकड़ेगा, उसकी नौका को नष्ट कर दिया जायेगा, उसके बाद 41 चीनी, वियतनामी, थाई और फिलीपीन्स की नौका को इस क्षेत्र में नष्ट कर दिया गया। चीन ने मछली पकड़ने और कोष्ट गार्ड को दक्षिणी चीन सागर का हिस्सा बना लिया है। चीन के मछली पकड़ने वाली नौका बाकी देश के तटीय जलीय क्षेत्र में घुसकर मछली पकड़ती है और यह दावा करती है कि

परम्परागत रूप से यह क्षेत्र चीन के मछली पकड़ने का क्षेत्र है।

इण्डोनेशिया ने इसे नाटूना द्वीप समूह पर अपना दावा पेश कर इस क्षेत्र में बड़ी चुनौती दी और बहुत सारे चीनी नौकाओं को समाप्त किया और चीनी मछुआरों को जेल में डाल दिया।

भूराजनीति और SLOC

विश्व का 50 प्रतिशत व्यापार दक्षिण चीन सागर से संचालित होता है, इस वजह से यह क्षेत्र का विश्व को राजनीति में अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्र जैसे कि जापान, दक्षिण कोरिया, उत्तर कोरिया, ताइवान, पूर्वी रूस का व्यापार और निर्यात दक्षिण चीन सागर से ही होकर गुजरता है। ऐसे में अगर किसी राष्ट्र का दक्षिण चीन सागर पर पूरा नियंत्रण हो तो वह जापान, दक्षिण कोरिया, उत्तर कोरिया, ताइवान की आर्थिक गतिविधियों पर बड़ा नियंत्रण बनाकर रख सकता है।

चीन अगर दक्षिण चीन सागर पर नियंत्रण रखता है तो आने वाले समय में चीन की यह कार्यवाही अमेरिकी नौसेना पर भारी पड़ सकती है, क्योंकि उसके पास भी त्वरित कार्यवाही करने वाली नौसेना है, जिससे दोनों देशों के बीच विवाद बढ़ सकता है। दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र चीनी सेना के खिलाफ मनोवैज्ञानिक रूप से एकजुट नहीं है। इसके अलावा दक्षिण पूर्वी राष्ट्रों को आन्तरिक चुनौतियों और पिछले इतिहास की बहज से सामूहिक रूप से इस क्षेत्र के राष्ट्र चीन के विरूद्ध खड़ा नहीं हो पा रहे हैं। चीन अमेरिका का चुनौती देकर भी विश्व में अपने आप को दूसरी महाशक्ति के रूप खड़ा करना चाहता है, जिसमें वह बहुत हद कामयाब हो रहा है।

दक्षिण चीन सागर में बड़ी महाशक्तियाँ

अमेरिका ने यह घोषणा कर दी है दक्षिण चीन सागर में नौ परिवहन की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करेगा, पर इसके लिए अमेरिका ने केवल नौसैनिक पेट्रोलिंग का सहारा लिया है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि चीन के मिसाइल सिस्टम की मारक दूरी और ज्यादा सटीक हो गई है। ऐसी स्थिति में अमेरिकी नौसेना इस सागर में अभी पेट्रोलिंग कर रही है।

जापान भी दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती हुई गतिविधियों से सतर्क हो चुका है। जापान का लगभग सारा तेल और गैस दक्षिणी चीन सागर से ही आता है, अगर उस पर चीन का उस पर नियंत्रण हो गया, तो जापान के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संकट खड़ा हो जायेगा। इसीलिए जापान ने अपने युद्ध प्रतिरोधक के लिए संविधान में संसोधन का प्रयास कर रहा है, और अब उसकी सेना मित्रराष्ट्रों की मदद के लिए युद्ध की घोषणा कर सकती है।

जहाँ तक भारत का प्रश्न है दक्षिण चीन सागर में वह भी अमेरिका की तरह नौ परिवहन की स्वतंत्रता पर बल देते हुए कहा है कि दक्षिण चीन सागर में जो विवाद है उसका शांतिपूर्वक समाधान होना चाहिए। भारत ने भी अपने नौसेना की पेट्रोलिंग दक्षिण चीन सागर में बढ़ा दी है। भारन ने दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों के साथ अपने रक्षा सम्बन्धों का आगे बढ़ाया है।

चीन अमेरिका और भारत का इस क्षेत्र में स्वतंत्र नौ परिवहन की नीति का विरोधी है। चीन इसको अपने हित के अनुकूल नहीं मानता है। चीन स्प्रैटली द्वीप समूह और मलक्का जलडमरू मध्य पर अपना दावा करता है, चीन स्प्रैटली द्वीप समूह पर अपना आधारभूत ढाँचा खड़ा कर दिया है, जिसके कारण इस क्षेत्र में अमेरिकी नौसेना का आना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए अमेरिका दक्षिण चीन सागर में जहाजों के वेरोकटोक आवागमन का समर्थन करता है जिससे उसके दीर्घकालिक हितों की सुरक्षा हो सके।

दक्षिण चीन सागर में रूस के अपने हित है रूस का नजरिया पारम्परिक है। रूस इस क्षेत्र के विवाद का शांतिपूर्ण समाधान चाहता है उसकी मान्यता है कि इस क्षेत्र में किसी तीसरे पक्ष का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे इस क्षेत्र के विवाद का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो जायेगा। रूस के विरोधियों का तर्क है कि रूस चीन से तालमेल बिठाकर इस मामले को अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने का विरोध कर रहा है। इस मामले में रूस किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप का विरोध करता है। रूस के विरोध के दो कारण है पहला अमेरिका का इस क्षेत्र में संलिप्तता और दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय मध्यस्थता का विरोध। यह दोनों विरोध जितना चीन के हित में उतना रूस के भी हित में है। इस प्राकर रूस चीन और वियतनाम को ध्यान में रखकर इस क्षेत्र में बहुत सन्तुलन बनाकर चल रहा है, क्योंकि चीन और वियतनाम दोनों ही रूस के सामायिक साझेदार है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहाँ जा सकता है कि दक्षिण चीन सागर विवाद वर्तमान समय में विश्व का सबसे गंभीर और महत्वपूर्ण विवाद बनता जा रहा है। इस क्षेत्र में जो भी देश एवं महाशक्तियाँ सक्रिय है सबके अपने–अपने दीर्घकालिक हित है, चीन अपनी विस्तारवादी नीति के तहत इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों, महत्वपूर्ण सामरिक एवं भौगोलिक द्वीप समूहों पर अपना नियंत्रण बनाना चाहता है, जिससे कि उसके दीर्घकालिक व्यापारिक एवं सामरिक हितों की सुरक्षा होती रहे, वही इस क्षेत्र में विद्यमान देश भी अपने दीर्घकालिक भौगोलिक सामरिक एवं व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर चीन की विस्तारवादी नीति का विरोध कर रहे हैं। जापान, अमेरिका और कोरिया, ताइवान, भारत की दक्षिण चीन सागर के प्रति यह नीति है कि यह क्षेत्र स्वतंत्र नौ परिवहन के लिए खुला रहे, जिससे वे अपनी व्यवसायिक गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन कर सके, लेकिन चीन विशेषकर अमेरिका को दक्षिण चीन सागर से दूर रखना चाहता है। अगर देखा जाय तो यह क्षेत्र एक तरह से बड़ी शक्तियों के लिए तनाव एवं प्रतिस्पर्धा का केन्द्र बनता जा रहा है। यहाँ पर बड़े पैमाने पर सैन्यीकरण हो रहा है, जिसके कारण यह क्षेत्र विश्व के तनाव का केन्द्र बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में यह कहा जा सकता है कि बड़ी शक्तियों को अपने संकीर्ण हितों को त्याग कर इस क्षेत्र को शांति एवं विकास की तरफ ले जाने में अपना योगदान देना चाहिए। दक्षिणी चीन सागर विवाद को चीन को अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत समाधान करना

चाहिए नहीं तो इस क्षेत्र के अधिकांश राष्ट्र विरोधी हो जायेंगे। अमेरिका, जापान–कोरिया, रूस, भारत जैसे राष्ट्रों के उत्तरदायित्व है कि दक्षिण चीन सागर विवाद का शांतिपूर्ण समाधान करने में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Top issues at Asian Security Meet, Associated Press Robin Mcdovell 29 Sep. 2012.*
2. *Limits of Ocian and Seas 3rd Edition IHO (International Hydrographic Organization) 7 Feb. 2010 PP. 108-109*
3. *Rueters Editorial (16 Oct. 2011) "China paper wars Ind/Veet".*
4. *Office of Naval Intelligence 2008 Washington DC, US, PP. 23-30*
5. *Wu Dengfeng (2009) Deep Blue Defence- A Modern Force at Sea.*
6. *I am Easton 03 Feb. 2014 "China's Reecphvely Weak Military" The Refdomat.*
7. *The Freedom of Sea "Online uprary of abity" 27 Jan. 2017.*